

5,11,6. इन्द्र इच्छतः सखा । चरैवेति *Ait. Br.* 7,15. चराति चरतो भगः *ebend. Kītj. Ča.* 8,6,38. *Čāñkñ. Ča.* 14,50,4. स्वस्ति ते सूर्य चरसे (*infln.*) रथाय *AV.* 13,2,6. *RV.* 1,92,9. 5,47,4. — तितावटसि राजेन्द्र अतरति चराम्यरुम् *MBh.* 1,3071. दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः *M.* 10, 55. स्तेनानाम् — निभृतं चरतो तित्ति 9,263. कथमेका — चरिष्यति वने *MBh.* 3,2355. *R.* 1,3,5. 9,26. चरमाणस्तु सो ऽरण्ये *MBh.* 3,12655. समी-
त्य वसुधां चरेत् *M.* 6,68. नक्तं चराश्चरते *Sāv.* 5,74. वेदिं परितः शृङ्गाश्चर-
ति *Čāñk.* 75. अयोमुखानां शूलानामप्ये चरितुमिच्छसि *R.* 3,53,58. इतस्ततो
ऽपि कपयश्चरतस्य रामस्यैव मनोरथाः *Ragh.* 12,59. कृत्वा सारस्तु चरति
मृगो यत्र स्वभावतः *umherstreichen, weiden M.* 2,23. मृगाणां चरतो वने
Sāv. 5,74. *M.* 8,236. कथं च तस्य देवस्य चरत्तमविद्वरतः *R.* 1,41,26. कथं
मत्स्याश्च सौवर्णाश्चरति विमले जले 4,51,8. Wind, Sonne, Mond *N.* 24,
27. fgg. प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चरति वायुः *M.* 9,306. चरति विक्रिः *sich*
verbreiten Varāñh. Brh. S. 19,7. विपति चरतो ग्रहाणाम् 17,2. अत्र पूर्णि-
मादिने समुद्रवेला चरति *Pāñkāt.* 74,22. यत्र श्यामो लोहितलो दण्डश्चर-
ति पापका *M.* 7,25. इन्द्रियाणां हि चरताम् *in Bewegung sein Bhag.* 2,
67. परिवादो हि ते देवि महालोके चरिष्यति *R.* 2,33,30. त्रयो च सम्य-
क्चरति *Varāñh. Brh.* S. 19,11. — 2) *durchwandern, durchstreichen, durch-*
laufen: सर्वं वापि चरेद्दामम् *M.* 2,185. चरेयुः पृथिवीम् 9,238. सरीसृपाश्च
— चरति पृथिवीम् *R.* 2,28,19. *Hip.* 4,12. *Draup.* 1,3,5,5. *N.* 17,4,24,
19. *R.* 1,65,26. 3,7,13,18. 43,11. आरित्यचरितांश्चोक्तान् *Sund.* 4,24.
चरमाणः फलाहारः कृत्स्नं जगदिदम् *MBh.* 3,12927. *Hariv.* 4897. शिखी
चरति भचक्रम् *durchläuft die ganze Ekliptik Varāñh. Brh.* S. 46,15 (16).
तां चरन्स नदीम् *dem Flusse entlang gehend Hariv.* 3632. पदवीं चरधम् *ge-*
het dem Wege entlang, folget der Spur Draup. 6,19. रागेद्वषवियुक्तस्तु वि-
षयानिन्द्रियैश्चरन् *den Sinnesobjecten nachgehend Bhag.* 2,64. — 3) *sich*
aufführen, sich verhalten; verfahren, handeln: उभे एनं द्विष्टो नभसी च-
रत्तम् *verabscheuen sein Benehmen AV.* 5,18,5. मिथुया 4,29,7. पौर्णे-
मनसा *RV.* 7,104,8. 1,158,2. य स्ताप्यन्मन्यते चरेन् *AV.* 4,16,1. चरत्तं
पापयामुया *RV.* 10,133,2. *AV.* 7,65,2. vom Vollziehen der liturgischen
Handlung (vgl. u. प्र) Ait. Br. 1,11. *Mund.* Up. 1,2,5 (med.). चरतीनां
च कामतः *derer die nach ihren Gelüsten verfahren M.* 5,90. एवं चरन्
9,324. नाक्रमेवं चरे लोके यथा तमभिमन्यसे *MBh.* 1,8442. ताम् — तथा
चरत्तम् 3,1363. समैर्हि विषमं यस्तु चरेद्दमूत्यतो ऽपि वा *M.* 9,287. आ-
त्मवत्सर्वभूतेषु यश्चरेत् *MBh.* 14,534. तस्यां त्वं साधु नाचरः *Ragh.* 1,76.
Namentlich häufig a) mit einem instr. mit *Etwas verfahren, sich zu*
thun machen. Etwas behandeln: यमस्य येनं बलिना चरामि *AV.* 6,117,
1. अथेन्वा चरति मायया *RV.* 10,71,5. उपाशु वाचा चरति, kürzer auch
ohne वाचा *Ait. Br.* 1,27. *Čat. Br.* 2,6,1,19. तिर इव वै मिथुनेन चर्यते 1,
9,2,5. यज्ञेन 5,2,15. कृषिणा 11,1,9,4. यजुर्भिः 4,6,9,20. ऋतुयैः 3,
4,3. वपया 3,8,2,29. 5,41. *Kītj. Ča.* 3,3,10. 4,4,11. 10,6,7. *Āčv. Grh.*
1,11. चरतो नियमेनैव *derer die Selbstbeziehung üben R.* 2,28,15. स
यत्रैतत्स्वप्नया चरति *sich im Schlafe befinden Čat. Br.* 14,5,1,19. — b)
mit einem partic., zuweilen auch mit einem absolut., umschreibend;
meist von einer anhaltenden Thätigkeit oder einem solchen Zustande:
ते नाक्रपालश्चरति विचिन्वन् = विचिनोति *AV.* 10,8,12. अयावमिश्चरति
प्रविष्टः *Agni steckt in dem Feuer, ist enthalten in d. F.* 4,39,9. 3,10,
4. *VS.* 2,30. *TBa.* 2,7,25,1. ये दस्यवः पितृषु प्रविष्टा ज्ञातिमुखा ऋतुता-

II Theil.

दृशरति *AV.* 18,2,28. एकां वृत्रा चरसि जिघ्रमानः *RV.* 3,30,4. (*TS.* 2,4,
22,1.) श्यामा पक्वं चरति बिभर्ती गौः = बिभर्ति 14. स्तोमोश्चरति सुमती-
रिणानाः 10,47,7. भिषज्यतो चरतुः *Čat. Br.* 4,1,5,8. ते ऽर्चतः आम्यत्त-
श्चरुः 1,6,2,3. 3,5,2,8. 5,1,1,1. ज्वो यस्ते वाजिनिह्निता गृहा यः श्येने
परितो घचरच्च वते *VS.* 9,9. *RV.* 3,38,4. 48,3. 54,2. *AV.* 11,5,1. 12,4,
37. इमे ते इन्द्र ते व्यं ये त्वारभ्य चरामसि *wir sind es, Indra, die Dei-*
ten, die stets an Dich sich halten, RV. 1,37,4. मेघायात्मानमारभ्य चरति
यो दीक्षितः *TS.* 6,1,22,6. चरतुर्वत्सपूर्यानि चारयतो *Hariv.* 3348. विहाय
कामान्यः सर्वान्पुमाश्चरति निःस्पृहः *Bhag.* 2,71. स स्वामिनमवज्ञाय चरेच्च
निरवप्रहः *Hir.* 11,94. — 4) *leben, sein, sich befinden; von einem län-*
ger dauernden Zustande und von einem beweglichen oder lebenden
Subjecte gebraucht: अथ श्रुत्वास्या चर *AV.* 6,139,2. अगदश्चर 4,17,8.
सुकृत्वायुः सुकृतश्चरेयम् 17,1,27. स इदो जा यो गृह्णे ददात्यन्नेकामाय चरते
कृशाय *RV.* 10,117,3. ज्ञायो जिज्ञासे मनसा चरतीम् *AV.* 14,1,56. एका एव
चरेन्वित्यम् *M.* 6,42. तस्माच्चरेथः सततं तमाशीलो जितेन्द्रियः *MBh.* 1,
1734. स्वर्गं प्राप्ताश्चरति स्म देवैः सह गतव्यथाः 3,1736. सुखं चरति लोके
ऽस्मिन् *M.* 2,163. स्वस्ति चरति *Bhāg. P.* 3,1,35. *sich befinden, stehen.*
sein von Gestirnen: अग्निषामु चरन् *Varāñh. Brh.* S. 9,28. 10,15,18. —
5) *an Etwas gehen, sich an Etwas machen, üben, treiben, vollziehen;*
sich einer Sache unterziehen; (im Handeln) beobachten; mit dem acc.:
यत्किं चेदं देव्ये जने ऽभिद्राहं चरामसि RV. 7,89,5. 10,164,4. येन धनेन
प्रपणं चरामि *AV.* 3,15,5. राजसूर्यम् 4,8,1. व्रतानि 11,2. *VS.* 1,5,2,28.
Čat. Br. 2,4,2,6. *Gobh.* 3,1,15. *Āčv. Grh.* 1,8,22. *M.* 2,187. 4,198.
शिरान्नतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् *Mund.* Up. 3,2,10. *Jāñ.* 3,299. *MBh.* 1,
1929. 3,7026. 8070. चरितव्रत *R.* 1,3,1. ब्रह्मचर्यं चर *Čāñkñ. Grh.* 1,17,
2,11. *M.* 2,249. मन्त्रश्रुत्यम् *RV.* 10,134,7. दुश्चरितम् *AV.* 9,5,3. गिरा-
मृपश्रुतम् *RV.* 4,10,3. वज्रं कृच्छ्रा चरत्तम् 10,52,4. आपो ह स्वमेव वशं
चेरुः *Čat. Br.* 3,9,4,14. 13,5,4,22. मिथुनम् 4,6,7,9. *Kauç.* 141. *Čāñkñ.*
Ča. 15,17,16. *Kāñd.* Up. 3,17,3. धर्मम् *Āčv. Grh.* 1,6. *Taitt.* Up. 1,11,
1. *M.* 3,30. *Jāñ.* 1,60. *MBh.* 1,3417. *R.* 3,10,15. *Pāñkāt.* III, 178. तपः
MPñ. 3,8504. *Hariv.* 2321. *R.* 1,57,2. चिराद्धीर्णम् — तपः *Bhāg. P.* 5,
6,3. प्रकृष्टं मया पुण्यं चीर्णम् *MBh.* 13,91. यथा नास्तकतं किंचिन्म-
नसापि चराम्यरुम् 3,2982. पापम् *Bhag.* 3,36. तेजोवृत्तम् *M.* 9,303. चीर्णा-
वृत्त *MBh.* 13,1595. तया चरितपूर्वम् — नीवारवलम् *Čāñk.* 96. को हि मे
भोक्तुकामस्य विघ्नं चरति *ein Hinderniss in den Weg legen Hip.* 3,17.
Hariv. 6790. भैक्षम् *Almosen bitten M.* 2,48,49,182. ब्राह्मणेषु चरेद्भैक्षम-
निन्द्येषु *Jāñ.* 1,29. 3,59. *R.* 2,43,4. विवादम् *Streit führen M.* 8,8. संब-
न्धान् Verbindungen eingehen 2,40. मृगयाम् *jagen Draup.* 6,9. *R.* 3,49,
18. चचार समरे मार्गान्वाणैः *sich Wege bahnen 34,4. तिथिवृद्धा चरेत्पि-*
पाडान् शुक्ता zu sich nehmen, verzehren (vgl. चारिन्) Jāñ. 3,324. स च
मुखेन शस्यं चरति *weiden Hir.* 81,15. *Bhāg. P.* 5,8,14. (उष्ट्रः) एकस्तु
पुनः पृष्ठे क्रीडां कुर्वन्वहारीश्चरन्वावतिष्ठति *Pāñkāt.* 229,17. Daher wohl
चर *essen Dhātup.* 15,51,1. vgl. jedoch u. आ. तपसा इन्द्रियग्रामं यश्चरेत्
die Sinnesorgane mit Kasteiungen behandeln, kasteien MBh. 14,544. —
6) euphem. mit Auslassung von मिथुन (s. u. 5.): *es zu thun haben mit:*
रत्वा चरित्वा Čat. Br. 14,7,1,17. यदन्यस्य सत्यन्येन चरति (स्त्री) *wenn*
ste dem Einen gehört und mit einem Andern es thut 2,5,2,20. — 7)
Jmd (acc.) zu Etwas (acc.) machen: वयं नरेन्द्र सत्यस्य भरत चराम *wollen*

80*